(iv) सरकार की दमननीति ⇒ ब्रिटिश द्वारा एक तो युद्ध में भारतीयों की सहायता प्राप्ति की कोशिश की गई थी तो दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार भारतीयों के मांगों को निर्ममता पूर्वक कुचलने की कोशिश कर रहा था। राष्ट्रीय आंदोलन के लिए शासन द्वारा प्रेस अधिनियम और दंडात्मक अधिनियम का सहारा लिया गया। इन कार्यों ने आंदोलन के लिए मजबूर किया।

(v) खिलाफत का प्रश्न — तुर्की के खलीफा, अब्दुल हमीद II समूचे विश्व के सूफी मुसलमानों के धर्म गुरु मान जाते थे। इस्लामी जगत में उसकी प्रतिष्ठा पैगम्बर के बाद सबसे अधिक थी। भारतीय मुसलमान भी भावनात्मक और धार्मिक बंधनों से उसके साथ जुड़े हुए थे। अंग्रेजों ने खलीफा को पदच्युत कर दिया, जिससे विश्व के मुसलमानों के साथ-साथ भारतीय मुसलमान भी खलीफा के प्रश्न पर अंग्रेजों के विरोधी हो गए। अली बंधु के नेतृत्व में मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध खिलाफत आंदोलन की शुरुआत कर दी। अतः गाँधी जी ने हिंदु मुसलमान एकता को प्रदर्शित करते हुए असहयोग आंदोलन प्रारंभ कर दी।

(vi) रॉलेट एक्ट ⇒ युद्ध के दौरान क्रांतिकारी काफी सक्रिय रहे। उन्हे दबाने के लिए अंग्रेजों ने विशिष्ट अधिकार के अंतर्गत अपना दमन चक्र चलाया। इस चक्र को विधिवत रूप देने के लिए एक आयोग बनाया जिसका अप्रैल 1918 ई. आयोग ने अपना रिपोर्ट दिया, इस आधार पर रोलेट एक्ट अधिनियम पास किया गया।

इस अधिनियम के अनुसार यह अधिकार प्राप्त था कि वह बिना दोष सिद्ध किए हुए

किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर जेल में बंद कर सकता था। गाँधी जी ने इसे काला कानून कहा और इसके विरोध में चारों तरफ असंतोष की लहर फैल गई तथा आंदोलन के लिए उतारू हो गई। यह एक्ट असहयोग आंदोलन का तत्कालिन कारण माना जाता है।

(VII) जालियाँवाला बाग हत्याकांड ⇒ रॉलेट एक्ट के विरोध में तथा डॉ॰ सत्यपाल तथा डॉ॰ किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में जनता ने 13 अप्रैल 1919ई. को अमृतसर में एक सभा जालियाँवाला बाग में की। जहाँ पर उस समय के जनरल डायर ने बिना बिना चेतावनी दिए गोली चलवा दिया जिससे सैकड़ो लोगों की जान चली गई। इससे गाँधी जी को आंदोलन चलाने में एक हथियार का सहयोग मिला क्योंकि इस घटना से गाँधी जी को काफी आघात पहुँचा था।

(VIII) हण्टर कमिटि की रिपोर्ट ⇒ इस घटना से गाँधी जी को बड़ा क्षोभ हुआ और उन्होंने अंग्रेजी सरकार से मांग की कि भारत के वायसराय को वापस बुलाया जाए तथा हत्याकांड के दोषी जनरल डायर के विरुद्ध कार्यवाही की जाए लेकिन इसके विपरीत जनरल डायर को शेर-ए-पंजाब की उपाधि से सम्मानित किया गया। इससे गाँधी जी काफी क्षुब्ध हो गए तथा असहयोग आंदोलन चलाने के लिए दृढ संकल्प हो गए।

कार्यक्रम ⇒ नागपूर के अधिवेशन में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम को तैयार किया, इसके दो पहलू थे।

Scanned with CamScanner

(i) रचनात्मक (ii) विध्वंशात्मक। रचनात्मक कार्यों में स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग किया जाए। राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की जाए। हिंदु-मुस्लिम एकता को मजबूत किया जाए। प्रत्येक घर में चरखा एवं कढाई-बुनाई का प्रचार किया जाए। दूसरे पहलू से सरकार के कार्यक्रम का बहिष्कार किया जाए।

आंदोलन का प्रारंभ ⇒ उपर्युक्त कारणों के चलते कांग्रेस ने अपनी 1920 ई. के नागपूर अधिवेशन में असहयोग आंदोलन चलाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाने को कहा तथा गाँधी जी ने कैसर-ए-हिंद की उपाधि सरकार को वापस लौटा दी। विद्यार्थियों ने स्कूल कालेज छोड़ दिया, कई राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किए गए। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। एवं घर-घर में चरखा की स्थापना होने लगी। एक समय में अजीब हिंदु-मुस्लिम एकता देखी गई।

सरकार का दमन चक्र ⇒ November 1921 ई. में सम्राट जान पंचम के ज्येष्ठ पूत्र "प्रिंस ऑफ वेल्स" भारत आए, आंदोलन में कांग्रेस द्वारा उनका बहिष्कार किया गया। परिणामस्वरूप सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने का मन बना लिया। कांग्रेस को गैर कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया। हजार की संख्या में स्वयं सेवकों एवं नेताओं को गिरफ्तार किया गया।

आंदोलन का स्वरूप ⇒ सरकार द्वारा आंदोलन को दबाने के लिए चलाए गए दमनचक्र के कारण आंदोलन का स्वरूप हिंसात्मक हो गया। इसी बीच 5 Feb 1922 ई

Scanned with CamScanner